❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को 195वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 42, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 फरवरी, 2019 से रविवार 24 फरवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पाक की शह पर नापाक हरकत

जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में सी.आर.पी.एफ. काफिले पर आतंकवादी हमला

सारे भारत में रोष व शोक : कड़ी कार्यवाही की मांग

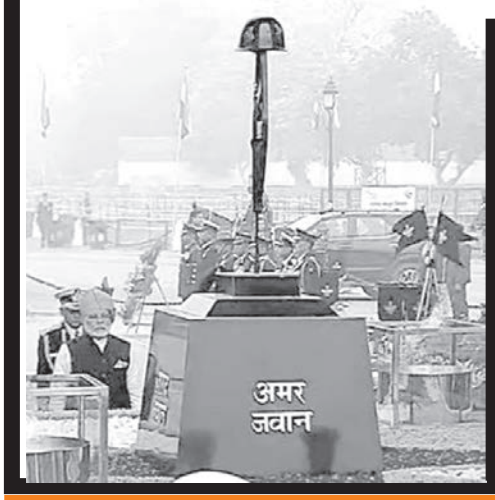

शहीद जवानों को आर्य समाज की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि शत-शत नमन

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

गुरुवार 28 फरवरी, 2019
तद्नुसार फाल्गुन कृष्ण 10 (दयानन्द दशमी)
सायं : 4 से 7 बजे

-: स्थान :-
सी4जी पार्क, जनकपुरी, नई दिल्ली
(श्रीराम मन्दिर एवं गुरुद्वारा के बीच वाला पार्क)
निकट कदीमी स्वीट्स

यज्ञ-प्रवचन एवं भव्य जन्मोत्सव समारोह

शुक्रवार 1 मार्च, 2019
तद्नुसार फाल्गुन कृष्ण 10 (दयानन्द दशमी)
प्रात: 9 से 1:30 बजे

-: स्थान :-
महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र
गाजीपुर, दिल्ली
(निकट आनन्द विहार बस अड्डा)

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं, सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनकर संगठन शक्ति का परिचय दें। कृपया कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
बलदेव सचदेवा, प्रधान — वीरेन्द्र सरदाना, मन्त्री — प० दिल्ली वेद प्रचार मंडल
शिवकुमार मदान, प्रधान — रमेशचन्द आर्य, मन्त्री — आ.समाज सी-3, जनकपुरी

उप प्रधान : ओम प्रकाश आर्य, श्रीमती मृदुला चौहान, अरुण प्रकाश वर्मा; कोषाध्यक्ष : विद्यामित्र ठुकराल
मन्त्री : सुखवीर सिंह आर्य, शिवशंकर गुप्ता, सुरेशचन्द्र गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र सरदाना, कृपाल सिंह

महाशय धर्मपाल, प्रधान — वेदव्रत शर्मा, उप प्रधान — चौ. लक्ष्मीचन्द, मन्त्री — सुबोध कुमार, कोषाध्यक्ष — पृथ्वीपाल आर्य, प्रबन्धक (9350221328)
महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर, दिल्ली

जयनारायण अग्रवाल, स्वागताध्यक्ष — हरिओम बंसल, कार्यक्रम संयोजक (9818264051) — अशोक गुप्ता, प्रधान — सुनहरीलाल यादव, मन्त्री
पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से

16वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

बुधवार 20 मार्च, 2019 ★ रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली-1 ★ समय : 3 से 7 बजे

वेद-स्वाध्याय

कल्याणकारी ऐश्वर्यप्रवाह

ये नदीनां संस्त्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः।
तेभि र्मे सर्वैः संस्त्रावैर्धनं सं स्त्रावयामसि।। -अथर्व. 1/15/3
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता -**सिन्धवः।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **ये** = जो **सदं अक्षिताः** = सदा चलते रहने वाले, कभी बन्द न होने वाले **नदीनां उत्सासः** = नदियों के स्त्रोत **संस्त्रवन्ति** = निरन्तर बहते हैं, **तेभिः मे सर्वैः संस्त्रावैः** = उन्हीं अपने सब प्रवाहों के साथ मैं **धनम्** = अपने धन को **संस्त्रावयामसि** = लगातार प्रवाहित करता जाता हूँ।

विनय - सदा बहनेवाली नदियों को देखो! ये अक्षीण स्त्रोतों से निकलती हैं, अतः इनका बहना कभी बन्द नहीं होता। स्त्रोतों से सदा निरन्तर नया-नया जल निकलता आता है और ये नदियाँ अप्रतिरुद्ध गति से बहती चली जा रही हैं। नदी के प्रत्येक स्थान पर प्रतिक्षण नया-नया जल भरता जाता है और वहाँ का पहलेवाला जल आगे बढ़ता जाता है। इसी प्रकार मनुष्य-संसार में धन का प्रवाह भी निरन्तर बह रहा है। एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य के पास धन पहुँच रहा है। कोई धनराशि किसी के पास और कोई किसी दूसरे से किसी और के पास जा रही है। एवं, हमारे मनुष्य-समाज में नाना प्रकार से धन की धाराएँ बह रही हैं। जैसे नदी-प्रवाह को रोक लेने से रुका हुआ पानी सड़ने लगता है और नाना रोगों को पैदा करता है, वैसे ही जिस मनुष्य-समाज में लोभी, लालची अपना ही पेट भरनेवाले या कंजूस लोग धन के प्रवाह को अपने यहाँ रोके रखते हैं, उस समाज में धन-वैषम्य के कारण नाना सामाजिक रोग और उपद्रव प्रकट होते हैं- जमींदारों और किसानों, स्वामियों और श्रमियों, अमीरों और गरीबों के झगड़े उठ खड़े होते हैं और हड़ताल, अत्याचार व क्रान्तियाँ जन्म पाती हैं। सारा राष्ट्रीय शरीर व्याधिग्रस्त हो जाता है। इसलिए हे प्रभो! मैं तो नदी के प्रवाह की भाँति अपने पास आये धन को आगे-आगे प्रवाहित करता जाता हूँ। उसे अपने पास रोकने की मूर्खता नहीं करता। सब ओर से आये धनों को-रुपये-पैसे से लेकर आत्मिक ऐश्वर्य तक के सब प्रकार के धनों को सब ओर आगे-आगे प्रवाहित करता जाता हूँ। हे नाथ् सब धन तेरा है। मैं तो केवल तुझसे आते हुए ऐश्वर्यप्रवाह को लेने वाला और इसे आगे पहुँचाने वाला हूँ। क्षणभर मेरे पास नये धन के रूप में जो ताज़ा जल पहुँचता है उससे ही मुझे तो मेरी पूर्ण पुष्टि मिलती जाती है। यही धनों का उपभोग है। धन को रोक रखने से तो यह हमें पुष्टि नहीं देता, किन्तु बिगड़कर, सड़कर हमारे साथ सारे समाज को हानि पहुँचाता है, अतः हे नाथ! मैं तो तेरे प्रत्येक ऐश्वर्य को ताज़ा-ताज़ा उपभोग कर उसे आगे-आगे चलाता जाता हूँ, जिससे कि मुझे तुझ अक्षीण स्त्रोत से अगला-अगला नित्य नया ऐश्वर्य-जल मिलता रहे और यह प्रवाह मुझे सर्वप्रकार से विकसित और पुष्ट करता हुआ मुझ द्वारा आगे-आगे भी बहता ही, बहता ही जाए।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में सी.आर.पी.एफ. काफिले पर आतंकवादी हमला

गांडीव उठाओ राजन! अब शान्ति का समय नहीं

धरो कवच आभूषण तजकर, नयनों में अब क्रोध भरों,
किस उलझन में पड़े हो राजन, तत्काल कटि कृपाण धरो,
बजने दो अब रणभेरी तुम रणचंडी का आह्वान करो।

दुःख की इस असहनीय घड़ी में प्रश्न भी है कि कब तक हमारे सैनिक इस लाक्षाग्रह में जलते रहेंगे, उठो राजन! अब सहन मत करो, बन अर्जुन इतिहास को पुनः गांडीव की टंकार सुना दो।

देश को हिला देने वाले पुलवामा हमले में जिस माँ ने बेटा खोया है उस माँ की छाती जरूर फटी होगी, दुनिया उस बाप की भी उजड़ी होगी, जिसने अपना सहारा खोया है। दर्द के चाबुक पत्नी और उस संतान के तन मन में पड़े होंगे, जिनकी मांग का सिंदूर और जिसके सर से बाप का साया छिना है, आज इनका दर्द देखकर देश के अन्तस् से अथाह पीड़ा और आक्रोश की लहर उठ रही है। आखिर कैसे मजहबी भेडियों ने कश्मीर को कब्रिस्तान बना डाला। वो किस तरह दुश्मन देश से मिलकर देश की संप्रभुता, अखंडता पर चोट कर रहे है। एक कथित मजहबी आजादी का सपना पाले वह लोग बार-बार ललकार रहे है और हम सहिष्णुता और अहिंसा के सिद्धान्तों का पालन करते-करते कायरता का आवरण ओढ़कर कश्मीरियत और जमुहुरियत का गाना गा रहे है।

एक तरफ हम लोग विश्व शक्तियों के भारत की साथ तुलना करते नहीं थकते, दूसरी और देखे तो हम इतने कमजोर राष्ट्र बन चुके है कि अपने हितों पर होती चोट पर निंदा से ज्यादा कभी कुछ नहीं कर पाते। बेशक किसी की धार्मिक आस्था पर चोट नहीं करनी चाहिए किन्तु जहाँ धर्म ही न हो अधर्म ही अधर्म दिख रहा हो तो आतंक में आस्था रखने वाले इन जहरीले सांपो के फन क्यों न कुचले जाये? शायद ऐसा न करना तो हमारे किसी धर्म शास्त्र में नहीं लिखा हैं।

पठानकोट के बाद उरी इसके बाद अब पुलवामा देश के सैनिक एक-एक कर भेडियों के चोरी छिपे हमलों का निवाला बन रहे है और हम सर्वशक्ति संपन्न होते हुए भी सिवाय आंसू पोछने, पीड़ा की कविता गाने के अलावा कुछ नहीं कर पा रहे है। कम से कम हमें राष्ट्र रक्षा में तो अपने ग्रंथो का ध्यान करना चाहिए कि जब दुश्मन बार-बार अट्टहास करता है जैसे अभिमन्यु वध के उपरांत अर्जुन को आत्मदाह करते देखने के लिए जयद्रथ कौरव सेना के आगे आकर अट्टहास करने लगा था तब जयद्रथ को देखकर श्रीकृष्ण बोले थे पार्थ! तुम्हारा शत्रु तुम्हारे सामने खड़ा है। उठाओ अपना गांडीव और वध कर दो इसका। आज भी समय वही मांग दोहरा रहा है -

गांडीव उठाओं कलयुग के राजन, कर दो दुश्मन का विनाश।

आखिर हम कब तक अपनी भारत माता के वीर सपूतों के शवों पर आंसू बहाते रहेंगे। जबकि दुश्मन हर बार हमें घाव देकर चला जाता है। इन 40 जवानों के बलिदान से देश के किस नौजवान का खून नहीं खोला होगा। किस माँ की आँखे नम नहीं हुई होगी, 40 घरों के चिराग बुझ गये, आखिर हम कब तक श्रद्धांजलि देते रहेंगे? हर दिन, हर सप्ताह, हर महीना, हर साल हमारे जवान मरते रहते हैं और राजनेता आरोप प्रत्यारोप लगाकर इस खून सनी जमीन पर मिटटी डालते रहते हैं। जो लोग आज इन मजहबी भेड़ियों का साथ दे रहे शुरू उनसे करना चाहिए क्योंकि महाभारत में युद्ध के दौरान कई बार कृष्ण ने अर्जुन से परंपरागत नियमों को तोड़ने के लिए कहा था जिससे धर्म की रक्षा हो सके। जो अधर्म के रास्ते पर चलेगा उसका सर्वनाश निश्चित है, फिर चाहे वह कोई भी व्यक्ति क्यों ना हो।....

सर्वनाश निश्चित है, फिर चाहे वह कोई भी व्यक्ति क्यों न हो। कर्ण गलत नहीं थे सिर्फ उन्होंने गलत का साथ दिया था। इस कारण उन्हें मौत मिली। समझने के लिए यही काफी है। अब केवल अकर्मण्य बने रहने का खतरा देश कब तक उठाता रहेगा।

हमें श्रीलंका जैसे छोटे देश से भी सीखना चाहिए कि किस तरह उन्होंने लिट्टे जैसे मजबूत आतंकी नेटवर्क के ढांचे को नेस्तनाबूद किया, हमें इजराइल से सीखना चाहिए कि अपने दुश्मनों के बीच रहकर अपना स्वाभिमान कैसे बचाया जाता है। म्यूनिख ओलिंपिक खेलों के दौरान 11 इजराइली एथलीटों को बंधक बनाया और बाद में सबकी हत्या कर दी। बंधकों को छुड़ाने की कोशिश में वेस्ट जर्मनी द्वारा की गई कार्रवाई में 5 आतंकी मारे गए थे। लेकिन इसके बाद बाकी बचे तीन आतंकियों, जिनमें इस साजिश का मास्टरमाइंड भी शामिल था, को वहां की खुफिया एजेंसी मोसाद ने सिर्फ एक महीने के अंदर ही ऑपरेशन 'रैथ ऑफ गॉड' चलाकर न सिर्फ खोजा बल्कि मार भी गिराया। इजराइल ने हमले की निंदा नही की थी बस प्रतिकार किया था। जिसकी जरुरत आज हमें भी हैं।

अभी तक जो चल रहा था वह एक राजनितिक गलती हो सकती है। अगर आगे भी यही होगा तो इतिहास इसे सर्वदलीय गलती कहने से गुरेज नहीं करेगा। आज राजनेताओं को समझना होगा। धर्मनिरपेक्षता सामाजिक समरसता का विषय हो सकता है किन्तु यदि शत्रु धर्म के सहारे ही हमला करता रहेगा तो कैसी धर्मनिरपेक्षता। यह बात सभी को समझनी चाहिए कि कोई भी देश वीरता के साथ जन्म लेता है और कायरता के साथ मर जाता है, अत्यधिक शांति भी कायरता का रूप होती है। अंत में सिर्फ इतना कहना चाहूँगा कि आत्मा ही नहीं दिल भी रोता है जब सरहद पर कोई जवान शहीद होता है। सभी वीर बलिदानी सैनिकों को आर्य समाज शत-शत नमन!

- सम्पादक

समसामयिक लेख

शादियाँ कम क्यों हो रही हैं?

विवाह भारतीय समाज में परम्परा के रूप एक महत्त्वपूर्ण और पवित्र हिस्सा रहा है। बल्कि यह कहिये कि विवाह एक जन्म का नहीं बल्कि सात जन्मों का पवित्र बंधन भी माना जाता रहा है। विवाह एक नवयुवक एवं एक नवयुवती के साथ रहने, जीने, आगे बढ़ने का रिश्ता नहीं बल्कि यह दो परिवारों के बीच बहुमूल्य सम्बन्ध भी स्थापित करता चला आ रहा हैं। किन्तु आज की भागती दौडती जिन्दगी की तेज रफ्तार में यह रिश्ता बेहद कमजोर होता जा रहा है। यदि आंकड़ों पर नजर डाले तो इसके टूटने की संख्या पश्चिम के देशों के मुकाबले कुछ कम रह गयी हैं। यह भी कह सकते है कि आज के आधुनिक समय में विवाह का महत्व दिन पर दिन कम होता जा रहा हैं।

यदि गंभीरता से इस विषय पर चर्चा की जाये तो यह एक ऐसी समस्या बनती जा रही है जो आने वाले समय में समाज और परिवारों की तबाही का बड़ा कारण बनेगी। आज हो यह रहा है कि इस आधुनिक सदी में एक तो नौजवान युवक-युवती विवाह के लिए आसानी से तैयार नहीं हो रहे और जो हो रहे है उनमें से अधिकांश के जल्द ही तलाक के मामले कोर्ट में खड़े मिल रहे हैं। जहाँ तेजी से बदलते समय में आज कई चीजें बदली वहां कुछ सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप भी बदल गये हैं। मसलन कुछ समय पहले तक लडकें-लड़कियां मां-बाप की इच्छा के अनुसार विवाह करके घर गृहस्थी बसाकर संतुष्ट हो जाया करते थे लेकिन आज ऐसा बहुत कम देखनें को मिल रहा हैं। बदलते इस दौर की बात करें तो स्वतंत्रता के साथ लड़कियों को अपने न सिर्फ पंख मिले, बल्कि उन पंखों को फैलाने के लिए आसमान भी मिला। ऐसे में शादी करके घर बसाने के कथन में बदलाव आ गया। अब सामाजिक रूप से स्थापित होने का मतलब शादी करके बच्चे पैदा करना नहीं रह गया, बल्कि एक अच्छी नौकरी, व्यवसाय या आर्थिक सम्पन्नता हो गया है।

.....दस वर्ष पूर्व माता-पिता और परिवारों की सहमति से हुई शादियाँ जिनमें लड़का- लड़की, दो परिवार, रिश्तेदारों के साथ जितने सैकड़ों-हजार परिवार शामिल होते थे सभी एक तरह से इसके साक्षी बन जाते थे। ऐसे में जब कभी इस रिश्ते में कुछ समस्या उत्पन्न होती थी तो पूरा परिवार और समाज इसे बचाने की कोशिश में जुट जाता था। किन्तु प्रेम विवाह या कुछ समय में एक दूसरे से आकर्षित होकर की गयी शादियाँ जल्द टूट रही हैं।.....

इसी विषय को यदि पलटकर लड़कों के मामले में देखें तो अधिकांश लड़के भी इससे बचने की कोशिश करते हुए लिव इन रिलेशनशिप जैसे रिश्तों को प्राथमिकता दे रहे है। दिन पर दिन दहेज के बढ़ते झूठे सच्चे मुकदमों ने कानून का किसी एक पक्ष में ज्यादा झुकना और दूसरे पक्ष को इसके खतरनाक नुकसान झेलने देना भी शादी का चलन घटने का बड़ा कारण है। ऐसा कतई नहीं है कि विवाह की संस्था खोखली हो गयी है और समाज को इससे किनारा करने की जरूरत है। नहीं बल्कि यह जो कमी हो रही है आज इसमें सुधार करने की जरूरत हैं। आज जब किसी युवा से शादी के बारे में चर्चा की जाती है तो वह नकारात्मक भाव प्रकट करते हैं यानि वह इस पवित्र रिश्ते को एक गुलामी जिन्दगी बताकर इससे बचने का प्रयास करेंगे।

आज से 10 वर्ष पहले हुई शादी और पिछले दो से तीन वर्षों में हुई शादियों में काफी अंतर देखने को मिलता है अर्थात् दस वर्ष पूर्व माता-पिता और परिवारों की सहमति से हुई शादियाँ जिनमें लड़का-लड़की, दो परिवार, रिश्तेदारों के साथ जितने सैकड़ों-हजार परिवार शामिल होते थे सभी एक तरह से इसके साक्षी बन जाते थे। ऐसे में जब कभी इस रिश्ते में कुछ समस्या उत्पन्न होती थी तो पूरा परिवार और समाज इसे बचाने की कोशिश में जुट जाता था। किन्तु प्रेम विवाह या कुछ समय में एक दूसरे से आकर्षित होकर की गयी शादियाँ जल्द टूट रही हैं।

सामाजिक प्रतिष्ठा का भय जो हमेशा रिश्ता बचाने में मदद करता था आज वह पूरी तरह से गायब होता जा रहा हैं। अगर अभी वर्तमान समय की बात की जाए, तो अगर सामने वाला लड़का हो या लड़की अगर किसी से प्रेम कर लेता है, फिर वह विवाह के बंधन मे बंधने के बाद जरा सी बात पर रिश्ता तोड़ देते हैं। पिछले दिनों में ऐसे कई रिश्ते देखें। एक लड़की के तलाक का कारण सिर्फ इतना था कि शादी के बाद लड़के ने उसके मुंह पर थप्पड़ मार दिया था। लड़की ने यह बात बर्दाश्त नहीं की और तलाक की अर्जी डाल दी।

एक दूसरे लड़के ने अपनी पत्नी से सिर्फ इस बात से तलाक लिया कि वह देर रात तक सोशल मीडिया फेसबुक आदि पर अपने मित्रों से चेट किया करती थी। यानि आजकल के लोगों की धारणा संकीर्ण विचारधारा जैसी हो गई है, क्योंकि उन्हें प्यार क्या होता है? विवाह क्या होता है? और इसकी पवित्रता क्या होती है? उनके बारे में यह अभी तक अनभिज्ञ है। पहले के समय और आज के समय में यही अन्तर है कि पहले के लोग विवाह को एक पवित्र रिश्ता मानकर हर सुख-दुख, उतार-चढ़ाव मैं साथ चल कर अपने रिश्ते को एक मंजिल तक पहुंचाते थे। परंतु आजकल के विवाह में अगर थोड़ा भी एक दूसरे को रोक- टोक किया या एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति ने कर पाए तो फिर यह रिश्ता ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाता, और तलाक की नौबत आ जाती है। इसीलिए आजकल की युवा पीढ़ी द्वारा विवाह का मजाक बनाया गया है, एहसास और रिश्ता अब पूर्ण रूप से खत्म हो गया है। *-राजीव चौधरी*

क्रान्तिकारियों की कथा

नेताजी की सिंह गर्जना

गतांक से आगे -

उधर, गांधी जी के अलावा प्रमुख कांग्रेसी नेता, कार्यकर्त्ता भी आ गए थे।

जब गांधी जी को पता चला कि दोनों सभाओं का समय एक ही है-शाम साढ़े पांच बजे, तो अपना सिर पीट लिया। कांग्रेसी आयोजकों से बोले कि यह आपने क्या किया? उनका सभास्थल खचाखच भरा होगा और आपके अधिवेशन में होंगे वहीं गिने-चुने, जाने-पहचाने चेहरे। और, इस सम्भावना से भी इन्कार नहीं किया कि कहीं कांग्रेसी ही टूटकर युवक-हृदय सम्राट को सुनने उधर न चले जाएं।

गांधी जी ने एक चाल चली। तुरन्त एक चिट लिखकर सुभाष बाबू के पास भिजवाई जिसमें आग्रह था कि वे अपने मीटिंग का समय बदलकर बजाय साढ़े पांच के साढ़े तीन कर लें। सुभाष बाबू ने चिट पढ़कर माथे से लगाई और संदेशवाहक से कहा, ''बापू का आदेश सिर-माथे।'' वह कांग्रेसी खुशी-खुशी संदेश लेकर गांधी जी के पास पहुंचा। वे भी फूले न समाए। उन्हें सुभाष से यही आशा भी थी। कांग्रेसियों ने तो जैसे महायुद्ध ही फ़तेह कर लिया।

इधर कई दिनों से फ़ारवर्ड ब्लॉक की सभा का प्रचार साढ़े पांच बजे शाम के लिए हो रहा था। जब सुभाष बाबू ने मास्टर तारासिंह को चिट थमाई और मीटिंग के लिए साढें तीन बजे का एलान करने का कहा, तो वे उनका मुंह ताकने लगे। ढाई तो बज ही रहा था। एक घण्टे में सब इन्तज़ाम कैसे मुमकिन था!

सुभाष बाबू दृढ़ शब्दों में बोले, ''नामुमकिन को मुमकिन बनाना ही है। यह बापू का आदेश है। इसे मैं टाल नहीं सकता।'' मास्टर तारासिंह निरुत्तर! जब वे अपने चेले-चपाटों के साथ जनता में इस तरह तबदीली का एलान करने निकले, घड़ी ठीक पौने तीन बजा रही थी।

सभा स्थल खचाखच भरा था। आकाश में गरजते बादल अलग से बरसने के लिए बेताब थे। इसके बावजूद आदमी, औरत, बच्चे एक लाख से कम नहीं थे। आजादी का दीवाना मंच से दहाड़ा...''भारत की प्रगति स्वतंत्र होने पर ही हो सकती है। सुनने में आया है कि हमारे देश के कुछ नेता अग्रेजों से समझौता करने जा रहे हैं। आज़ादी और गुलामी के बीच समझौता कैसा? यदि हुआ, तो दोनों मे कोई अन्तर न होगा। गुलामी के अलावा हम कुछ भी त्यागने को तैयार नहीं। हमें पूर्ण स्वराज्य चाहिए। इस इरादे से हमें संसार की कोई भी शक्ति डिगा नहीं सकती। आज़ादी मांगी नहीं, ली जाती है। (जोरों की तालियां और बादलों की गरज)। ''अब हमे कोई गुलाम बनाकर नहीं रख सकता!'' (फिर ज़ोरों की तालियां, 'सुभाष बाबू ज़िन्दाबाद' के नारे और बूंदा-बांदी।)

- क्रमशः

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

195वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (दयानन्द दशमी) एवं ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) पर विशेष

शिवरात्रि : प्रेरक धार्मिक पर्व

- डॉ. महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि देश का सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रेरक धार्मिक पर्व है। इसका सम्बन्ध मंगलकारी शिव परमात्मा को पूजा, अर्चना व्रत एवं संकल्प के साथ है। सभी धार्मिक आत्मा वाले अपनी पूजा भक्ति से इस पर्व को मनाते हैं। आज जो शिवरात्रि का स्वरूप मन्दिरों, तीर्थों, मीडिया और लोक प्रचलन में दिखाई देता है। वह मात्र ब्राह्म लोकाचार, आडम्बर, प्रदर्शन, तथा कर्मकाण्ड तक सीमित हो रहा है। सत्य है कि शिवरात्रि आत्मा, परमात्मा, सत्य तथा जीवनबोध का प्रेरक पर्व है। यह पर्व हमें जगाने, संभालने एवं आत्मा परमात्मा से जोड़ने की चेतना देने आता है। आज पर्वों का सत्यस्वरूप, मूल चेतना, सन्देश, प्रेरणा, उद्देश्य आदि भ्रान्त व विकृत हो रहे हैं। हम पर्वों में जीवन जगत के लिए प्रेरणा शिक्षा, सीख आदि नहीं ले जा रहे हैं। यह पर्व प्रतिवर्ष परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानने और जीवन लक्ष्य को पहचानने का सन्देश देने आता है। जो कल्याणकारी कण-कण में सर्वत्र विद्यमान शिव रूपी परमात्मा से आत्मा के मिलने की भावना जागृत करें, वही सच्ची शिवरात्रि है। बाकी रातें हमें सुलाने आती हैं। शिवरात्रि हमें जागने, व्रती व संकल्पी बनने की प्रेरणा देने आती है।

शिवरात्रि का आर्यसमाज से गहरा सम्बन्ध है। शिवरात्रि आर्य समाज के बीजांकुर का प्रथम दिन है। इसलिए आर्य विचारधारा और ऋषि भक्तों के लिए इस दिन का ऐतिहासिक प्रेरक महत्त्व है। यदि मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि सत्यबोध लेकर न आती, तो मूलशंकर दयानन्द न बनते। यदि ऋषि दयानन्द न होते तो आर्य समाज न होता। आर्यसमाज न बनता तो सत्य सनातन वैदिक धर्म का सत्य स्वरूप, नजर न आता। वेदों का उद्धार कैसे होता? स्त्री और शूद्धों को वेद पढ़ने-पढ़ाने की वकालत कौन करता? धर्मग्रन्थों तथा महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्त्व का असली स्वरूप दृष्टिगोचर न होता। हम सब लोग न जाने किन-किन दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, अधंविश्वास, ढोंग-पाखण्ड, गुरुडम आदि में फंसे हुए होते। न जीवन उद्देश्य और न सार्थक जीवन जीने का ढंग पता होता। आर्य समाज के उपकारों व योगदान में संसार उपकृत है। आर्य समाज के जन्म, स्थापना, निर्माण और इतिहास में शिवरात्रि बोध रात्रि बनकर आई। संसार की साधारण घटनाएं और जीवन के मोड़ महापुरुषों के जीवन में परिवर्तन तथा क्रान्ति घटित कर जाते हैं। मूलशंकर शिवरात्रि की रात जागने के बाद काभी जीवन भर चैन से नहीं सोये। इसी दिन शंकर के वास्तविक सत्यस्वरूप को जानने और उसे पाने की प्रबल इच्छा हुई थी। छोटी-छोटी घटनाओं, उपदेशों तथा बातों से जीवन बदल जाते हैं। जीवन का काया कल्प होने लगता है। पतित जीवन प्रेरक जीवन बन जाता है। योगी विलासी दुर्व्यसनी जीवन तपस्वी त्यागी और परोपकारी बन जाते है। यह तब होता है जब अन्दर से जागरूकता, आत्मचिन्तन, जिज्ञासा, भूख और प्रबल इच्छाशक्ति उद्बुद्ध होती है। तभी कहा गया है- जो जागत है, वह पावत है। वेद भी कहता है -

"यो जागार तम् ऋचा कामयन्ते"

जो जागता है उसे ही आत्मज्ञान तथा सत्यज्ञान प्राप्त होता है। अधिकांश लोग संसार में अनजाने में आते, और अनजाने में ही संसार से चले जाते हैं। उन्हें पता ही नहीं होता है कि यह अमूल्य, दुर्लभ, मानव जन्म क्यों मिला था। इसे पाने का उद्देश्य क्या है? शिवरात्रि आत्मज्ञान तथा सत्य ज्ञान का पर्व है। सच्चे शिव से जुड़ने सच समझने का सन्देश देती है। जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर चलो। बाहर की दुनियां से अन्दर की दुनियां में जाओ। उठो। जागो? अपने स्वरूप को समझो? जीवन जगत को संभालो। जीवन बड़ी तेज़ी से व्यर्थ की बातों में निकला जा रहा है। शिवरात्रि कह रही है मूलशंकर को बोध हो गया। हमें कब बोध होगा। हम कब अपना बोधोत्सव मनायेंगे। हम कब जागेंगे और संभलेंगे। ये पर्व आत्म शुद्धि आत्मविश्लेषण तथा आत्मनिरीक्षण का है। अपने पास बैठने का है। अपने से बात करने का है। सोचो! समझो कहाँ से चले थे कहां जा रहे है। संसार के बारे में हम बहुत कुछ जानते हैं। मगर अपने आत्मा परमात्मा के बारे में सोचे तथा अज्ञानी है। कितनी शिवरात्रियां आई और चली गई। हम वहां के वहीं खड़े हैं।

हमें जुलूस, लंगर, फोटो, माला, स्वागत सम्मान आदि में समस्त शक्ति, सोच, धन भाग दौड़ पूरी हो जाती है? कहीं भी आत्मचिन्तन, आत्मसुधार, बैचेनी, व्याकुलता और पीड़ा नजर नहीं आ रही है। यहीं पर्वों, उत्सवों, महासम्मेलनों तथा धार्मिक कार्यक्रमों की त्रासदी है। तत्काल कुछ समय प्रभाव, भाव-भावना व प्रेरणा रहती है। बाद को सब बराबर हो जाता है। इन बातों पर तत्काल गंभीरता से विचार - मन्थन करने की जरूरत है। जब तक जीवन में आर्यत्व, सत्याचरण, शुद्धता, पवित्रता, धार्मिकता आदि न होगा, तब तक दूसरों को आकर्षित व प्रभावित न कर सकेंगे। जलता हुआ दीया ही दूसरे दीये को जलाने में समर्थ होता है, बुझा दीया दूसरे को नहीं जला पाता है। जीवन से जीवन बनते और सुधारते हैं। आज हमारे जीवनों में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, वैदिकता, प्रभुभक्ति स्वाध्याय, आत्मचिन्तन आदि तेजी से छूट रहे हैं? इसी कारण बर्हिजगत् में धूमधाम है, अन्तजगत् सुनसान अशान्त बैचेन तथा परेशान है। ये बातें जीवन-जगत् को संभालती और रक्षा कवच का काम करती है।

पहले के लोगों में आस्तिकता, धार्मिकता तथा शुद्धाचरण की प्रधानता होती थी। आज उसका अभाव हो रहा है। आर्य समाज शरीर से बढ़ व फैल रहा है। आस्तिकता प्रभु भक्ति तथा आत्मा से सिकुड़ रहा है।

आर्य समाज का जीवन दर्शन अपने में प्रमाणिकता, व्यावहारिकता तथा पूर्णता लिए हुए है। इस के विचारों, आदर्शों, सिद्धान्तों आदि से जो जीवन जगत को मार्गदृष्टि व सन्देश मिलता है। उसका मुकाबला संसार की कोई विचारधारा नहीं कर सकता है। आज के जीवन-जगत को आर्य विचारधारा के सही मार्गदर्शन के लिए अत्यन्त आवश्यकता है। पीड़ा व कष्ट है कि कहने को श्रेष्ठ व समर्थक विचारों का धनी आर्य समाज अपने मूल आदर्शों, उद्देश्यों विचारों आदि से हट तथा कट रहा है। जहां सच्चे अर्थ में सेवा, सहयोग, भाईचारा, एकता, संगठन और मिशनरी भावना होनी चाहिए। वहां स्वार्थ पदलिप्सा, अहंकार, पदों को पाने और बने रहने की भावना तेजी से बढ़ती जा रही है। इन बातों में हम लोगों से दूर होते जा रहे हैं। जो लड़ाई हमें ढ़ोंग, पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास तथा दूसरे पाखण्डी सम्प्रदाय वालों से करनी थी। वह छोड़कर हम आपस में ही व्यर्थ की बातों विचारों पदों आदि के लिए लड़ पड़े। इस कारण आर्य समाज की विश्वसनीयता, साख, सम्मान, पहचान आदि कम हो रही है। युवा पीढ़ी हम से कट रही है। इन बातों पर अधिकारियों तथा समाज के शुभ चिन्तकों को मिल बैठकर तत्परता में सोचने की जरूरत है। जो रीढ़ की हड्डी योग्य विद्वान, संन्यासी, समर्पित कार्यकर्ता आदि है। वे अलग-अलग हो रहे हैं। उन्हें महत्त्व नहीं दिया जा रहा है। आर्य समाज के संगठन का प्रजातान्त्रिक ढांचा चरमरा रहा है।

यह शिवरात्रि का प्रेरक पावन पर्व हम सब आर्यों और ऋषि भक्तों को जागरण का अमर सन्देश दे रहा है। जो गुजर गया, उसे छोड़े। वर्तमान को संभालो। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। हमने अपनी सोच विचार स्वभाव आदत तथा व्यवहार को बदलना है। सोच विचार बदलते ही जीवन बदल जाता है। जीवन के बदलते ही दुनियां बदल जाती है। जो जीवन में दुरितानि हैं, उन्हें हटाना और यह भद्र को अपनाना है। पहले हमने अपना सुधार व कल्याण करना है। तभी हम दूसरों को प्रेरित व आकर्षित कर सकेंगे।

आओ! ऋषि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव पर आत्मबोध तथा आत्मचिन्तन करें। स्वयं जागे और दूसरों को जगायें। यह शिवरात्रि हम सबके लिए नव जागरण बन जाए। यही शिवरात्रि और ऋषिवर का अमर सन्देश है।

- बी.जे.-29, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

प्रयागराज कुम्भ में आर्यसमाज का वेद प्रचार

ऐतिहासिक नागवासुकी मन्दिर तक पाखण्ड खण्डिनी पताका के साथ शोभायात्रा के माध्यम से किया वैदिक धर्म प्रचार

पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी के साथ आर्यजगत के वरिष्ठ संन्यासियों ने किया नेतृत्व

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं हरियाणा के आर्यजनों से लिया शोभायात्रा में भाग

महाकुम्भ के मेले से आर्यसमाज का बहुत गहरा नाता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने कुंभ जैसे बड़े मेले में कई बार पाखण्ड खंडिनी पताका फहराकर मानव मात्र को वैदिक ज्ञानधारा और आर्य विचारधारा से जोड़ने का सफल प्रयास किया था। महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से प्रेरित होकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग, आर्यवीर दल एवं स्थानीय आर्यसमाजों के सहयोग से 2019 के कुंभ मेले में सैक्टर-11 प्रयागराज में अपना शानदार शिविर लगाया जिसमें देश और विदेश के लोगों ने लाभ प्राप्त किया। आर्य समाज के विचारों, मान्यताओं और परंपराओं से अवगत होकर एक नवजीवन जीने का संकल्प लिया। प्र.स., सतीश चड्डा महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली, श्री सुरिन्द्र चौधरी व्यवस्था सचिव, श्री मुकेश आर्य, बिजेन्द्र आर्य आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस क्रम में आचार्य शिवदत्त पांडे, आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्या नन्दिता शास्त्री, भजनोपदेशक श्री नरेश दत्त, श्री अजय प्रभाकर, श्री ओम प्रकाश आर्य, उप प्रधान दिल्ली सभा, श्रीमती उषा किरण उपप्रधान, श्री हरि ओम बंसल एवं श्री एस.पी.सिंह मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा, श्री अशोक गुप्ता, प्रधान पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, श्रीमती सुनीता पासी, महामन्त्री, प्रान्तीय आर्य महिला सभा, आर्य नेता श्री देवेन्द्र पाल वर्मा (उत्तर प्रदेश), श्री प्रमोद आर्य (वाराणसी), श्री विवेक आर्य (भरूआ सुमेरपुर), श्री सतबीर आर्य एवं प्रस्तुति कामा (दिल्ली) आदि अनेक गणमान्य आर्यजन सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त दिल्ली सभा के सभी सहयोगी कार्यकर्ताओं सर्वश्री जयप्रकाश शास्त्री, श्री अशोक कुमार, संदीप आर्य व अन्य साथियों के साथ महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सैन्टर की टीम ने दोनों दिन शोभायात्रा एवं भजन संध्या की वीडियो रिकार्डिंग की।

लगभग 5 किलोमीटर की इस शोभा यात्रा का समापन नागवासुकी मन्दिर, संगम तट, प्रयागराज पर किया गया। इस मन्दिर में महर्षि देव दयानन्द जी 1870 ई. में पहली बार पधारे और उस के पश्चात दो बार और पाखंड खण्डिनी पताका फहराने यहां पर आये, इसी मन्दिर के सामने एक ऐसी घटना घटी जिससे महर्षि जी को उस समय बड़ा कष्ट हुआ, जब एक महिला ने अपने धोती के आधे हिस्से में लपेटकर अपने बालक को मृत्युपरान्त नदी में बहाया और उसके शव से अपनी धोती का एक हिस्सा जिसमें उसे लपेटा था वह भी उतार लिया। महर्षि ने जब ये देखा तो उस महिला के पास गए और बड़े विनम्र भाव से यह पूछा कि आपने उस बालक के शव से अपनी धोती का कपड़ा क्यों उतारा। महिला ने जवाब दिया कि मेरे पास कोई अन्य धोती पहनने के लिए नहीं है । अत: मैनें अपनी धोती का वह हिस्सा जिससे मैनें अपने बच्चे के शव को ढका हुआ था, वह उतार लिया, यह सुनकर महर्षि का हृदय बहुत ही द्रवित और मानव जाति के उद्धार के लिये दृढ़ संकिल्पत हो गया। शोभायात्रा प्रयागराज कुंभ मेले के सैक्टर -11 से आरम्भ हुई जिसमें पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी, उनकी दोनों सुपुत्रियां श्रीमती किरन जी एवं श्रीमती प्रतिभा जी, श्री राजेन्द्र जी, श्री संजीव भारद्वाज, श्रीमती शशि जी व अन्य महत्वपूर्ण अधिकारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इस शोभा यात्रा में सार्वदेशिक आर्यवीर दल (पूर्वी उ.प्र.), आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद, पाणिनीकन्या महाविद्यालय वाराणसी, वेद वेदांग विद्या पीठ गुरुकुल आश्रम सुल्तानपुर, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्यवीरों, आर्य वीरांगनाओं एवं गुरुकुल विद्यार्थियों ने शोभायात्रा के मार्ग में जयघोष और भजनों से सारे वातावरण को गुंजायमान किया। पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले में शहीद सैनिकों के सम्मान में इस शोभायात्रा में देश भक्ति का जोश भी दिखाई दिया भारतमाता की जय, वन्दे मातरम् के नारे लगाए गए। 12 फरवरी को आत्मघाती हमले में 42 जवान शहीद हो गए थे। जिसके विरोध में रोष प्रकट किया गया और पाकिस्तान हाय-हाय और पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाए गए। शोभायात्रा में ढोल एवं डी.जे. आदि का प्रयोग किया गया।

कुम्भ में आर्यसमाज के वेद प्रचार शिविर में प्रवचन करते स्वामी सम्पूर्णानन्द जी साथ में हैं महाशय धर्मपाल जी, डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी, पं. नरेशदत्त आर्य एवं उपस्थित जन समुदाय

शोभायात्रा का नेतृत्व करते - पद संचालन करती दिल्ली की महिलाएं - बग्गी पर बैठे आर्य संन्यासी स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी एवं स्वामी सम्पूर्णानन्द जी एवं महाशय धर्मपाल जी।

आर्य समाज का यह शिविर जहां पर प्रतिदिन यज्ञ हुआ और अनेक अन्य कार्य योजना क्रियान्वित हुई तथा वैदिक साहित्य के स्टॉल लगाए गए वहीं विशाल शोभायात्रा एवं संगीत के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी डॉ. देवव्रत जी आदि महानुभावों ने किया और इसमें अनेक वेद प्रचारकों एवं भजनोपदेशकों ने भाग लिया। इस शोभा यात्रा में पूर्व और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त प्रयागराज में दिल्ली से आये लगभग 250 श्रद्धालु महानुभावों ने भाग लिया।

14 फरवरी की भजन संध्या व 15 फरवरी की शोभायात्रा के विशेष आयोजन में सर्वश्री अनुभव आर्य, मधुप शुक्ला, अजय मेहरोत्रा, नरेन्द्र कपूर, प्रतापगढ़ आर्य समाज के अधिकारी, स्थानीय आर्य समाजों के अधिकारियों का विशेष योगदान रहा। दिल्ली से श्री विनय आर्य महामंत्री दि.अ.

- सतीश चड्डा, संयोजक

Veda Prarthana - II
Rigveda - 27

Human Beings Do Not Gamble, Earn Wealth by Virtuous Means

- Acharya Gyaneshwarya

अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित्कृषस्व
वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः।
तत्र गावः कितवे तत्रजाया तन्मे
विचास्टे सवितायमर्यः।।

– ऋग्वेद 10/34/13

Akshairma divya krshimit krshasva vittae ramasva bahumanyamiinah.
Tatra gavah kitava tatrajaya tanme vichashte savita ayam aryah.

Rig Veda 10/34/ 13

Vedic dharma encourages us to earn wealth by performing jobs that require effort, hard work, and necessary sacrifice. Also, it recommends against earning money by jobs that do not require hard work, effort or 'sweat.' The reason for this that when money is earned or handed to a person who makes no or minimal effort, then the wealth promotes the person to become lazy, negligent and prone to various indulgences or vices. The best example of this in the society is young persons who suddenly inherit or are given large amount of wealth by their parents or grandparents without being required to work hard to earn it. In turn, many such young persons become lazy, callous, indulgent and some of the worse affected become undisciplined, immoral, atheist, full of vices, anarchist, and other criminal activities. Because their children inherit large amount of wealth without doing hard work, they become lazy, callous, indulgent, atheist, get into many vices such as gambling, deception etc. If their parents had taught them the value of money earned by hard work and not given them large amounts of free money, it is likely that the children would not have developed non-virtuous values and gotten involved in vices.

It is an ignorant person who thinks that he/she would become wealthy and prosper by putting in the least amount of effort. His one rupee will turn into two, two to four, four to eight and by building castles in the air (in hislher mind), he/she would become millionaire or billionaire overnight. 'Becoming rich without hard work', this mental weakness of people, started the tradition of lottery ticket selling all over the world, by telling them if they buy a one or five rupee ticket they may win and become over night millionaire.

Many persons try their luck by buying lottery tickets, gambling on horse races, poker and other card games, gambling in the stock market and a variety of other types of gambling. Millions of persons lose their money in the process and only an occasional winner becomes a millionaire. The idea of becoming a millionaire in this manner is in fact an act of mental violence and injustice because the joy of one person is based on the hurt of millions of persons. Unfortunately, this vice and deception of ' quick riches' i.e. becoming wealthy without doing hardwork, in the past 50 years has been promoted all over the world by governmental authorities to create revenue. The result is that millions of persons all over the world whether living in villages, small towns, or cities, by gambling, have lost their meager income and many have destroyed their homes, families or businesses hoping that they will have the 'winning ticket next time.' Moreover, once they destroy themselves and/or their families they become subjects of scorn and/or pity in their community.

Wealth generated by hard work through agriculture, business, factory or office work, manufacturing goods, artistic work etc., in contrast to gambling, generates fulfilllment, self esteem, honor, peace, and inner joy. A person who earns money by doing hard work usually uses it wisely for necessary and useful items such as buying a house, household appliances like stoves for cooking, refrigerators and/or air-conditioners, means for transport like a scooter or car, computers etc. and does not waste his/her money on useless baubles.

When a person becomes very greedy with a desire for 'quick wealth', then he/she loses his/her morality of, what is virtuous versus non-virtuous, dharma versus adharma, right versus wrong, just versus unjust. When the overriding goal of a person becomes gaining wealth by any means possible, then the person is willing to short-change societal and governmental rules of conduct, laws and fairness to all others. He/she starts to lie, cheat, deceive, steal at work or in business. The worst offenders even resort to violence by intimidation, robbing, murder, and associating with criminal organizations like goonda gangs in India, mafia or terrorist organizations. A few such vicious greedy persons then try to make life less peaceful, worrisome, and miserable for thousands and millions of other law-abiding persons. Commercial enterprises all over the world, these days exploit the public's greed for cheap goods by offering newest types of 'sales' promotions. To attract customers there are all types of sales pitches: Buy one and get second item of equal or less value free; buy one hundred grams of an item and the next fifty grams is free. The truth is that no shop or a business could survive if they sold items free or less than their cost. These sale gimmicks are truly a deception, which many societies have now gotten used to and have accepted. Nevertheless, they are deceptions appealing to our greed of getting something without doing hard work.

The Vedas state that persons who work hard and are honest in earning their living and gaining wealth, they alone find true happiness and peace in life. They would find fulfillment, self-esteem, and develop courage to fight for what is right and virtuous. Moreover, their spouses, children, and families would also find happiness in life, as well as such persons would be honored by the society. Farmers would not lose their animals to lenders or loan-sharks who give them loans to support their gambling habits. To make our lives successful, dear God may we always follow Your message and inspiration as stated in this Veda mantra, to do hard work, and not be tempted by gambling and false hopes of good luck to gain wealth.

To Be Continue....

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत
देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु
प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं –

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम – **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

– संयोजक, महाशय धर्मपाल
सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

प्रेरक प्रसंग
चमत्कारी मियाँजी की पोल खुल गई

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता और अनाथों के रक्षक व सेवक पं. श्री गंगाराम जी मुजफ्फरगढ़ (पश्चिमी पंजाब) में अपने कार्यालय में बैठे हुए थे। उन्हीं के साथ बैठनेवाले उसी कार्यालय के ड्राफ्टमैन लाला लद्धारामजी रैलन ने उनसे कहा, ''देखो! पण्डितजी एक व्यक्ति कैसा साहिबे कमाल है कि जो वस्तु जिस किसी के पास हो, ठीक-ठीक बता देता है।''

पं. गंगारामजी समझते थे कि ऐसे साहिबे कमाल (चमत्कारी) पुरुष हों तो शासन को पुलिस व गुप्तचर-विभाग की तनिक भी आवश्यकता न रहे। आपने उससे कहा कि यदि वह ठीक-ठीक बता दे तो मैं उसे अपने पास से एक रुपया दूंगा। लाला लद्धारामजी ने कहा, ''पण्डित जी! वह ठीक-ठीक बता देता है, आप इस प्रकार से अपने रुपये को न गवाएँ।'

पण्डितजी ने कहा, 'इस प्रकार से कुछ हानि नहीं होती।' उसने वैन मिलडर साहिब हैडक्लर्क (कोई अंग्रेज होगा), जिसके पास यह खेल हो रहा था, के पास जाकर पण्डितजी की बात कह दी। उन्होंने पण्डितजी को बुलाकर पूछा कि आपका क्या कहना है? उन्होंने कहा यदि यह छपाई हुई वस्तु बता दे कि किस के पास है तो मैं उसको एक रुपया दूँगा।

इस पर अंग्रेज ने उस साहिबे कमाल मुसलमान चपरासी खैर मुहम्मद से कहा कि तुम बाहर चले जाओ। पण्डितजी ने कहा, 'यह मुझे स्वीकार नहीं। जिन लोगों ने वस्तु छुपानी है, वे बाहर चले जाएं और यह चमत्कारी मियाँ आपके पास ही बैठा रहे।' उन्होंने कहा, ठीक है, ऐसा ही करते हैं। पण्डितजी ने वहाँ उपस्थित लाला लद्धाराम जी, लाला गोद्धारामजी तथा लाला गुरदित्तारामजी को अपने साथ लिया और कमरे के बाहर एक बरामदे में चले गये। पण्डित जी ने उनमें से एक के हाथ में एक वस्तु दे दी और सब कमरे में आ गये।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ऋग्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रितिनिधि सभा के मन्त्री श्री शिवशंकर गुप्ता जी के आवास पर ऋग्वेद परायण यज्ञ 25 से 27 जनवरी तक प्रतिदिन प्रात: एवं सायं 3-3 घंटे तक श्री यशपाल शास्त्री जी एवं श्री नरेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में कुशलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के बीच बीच में श्री यशपाल शास्त्री जी ऋग्वेद के मंत्रो का भावार्थ भी सुनाते रहे। यज्ञ पूर्णाहुति के पश्चात् सभी उपस्थित महानुभावों के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई थी, जिसमें आस-पड़ोस सैंकड़ो लोगों ने प्रीतिभोज का रसास्वादन किया।

श्री शिवशंकर गुप्ता जी के पूज्य पिता श्री राधेश्याम गुप्ता जी द्वारा स्थापित यह परम्परा निरन्तर पिछले 10 वर्षों से चल रही है। परिवार में नियमित यज्ञ के अतिरिक्त वर्ष में एक बड़े यज्ञ का आयोजन अवश्य किया जाता है।

आर्यसमाज बिडला लाइन्स में 195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर में दिनांक 28 फरवरी को प्रात: 10 बजे से 195वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं भण्डारे के कार्यक्रम आयोजित होंगे।

- संजीव बजाज, प्रधान

46वां वार्षिकोत्सव

रामगली आर्यसमाज हरिनगर घंटाघर का 46वां वार्षिकोत्सव 22-24 फरवरी को मनाया जा रहा है। समापन समारोह 24 फरवरी को आयोजित होगा।

- श्रीपाल आर्य, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज खेड़ा अफगान
सहारनपुर (उ.प्रदेश)

प्रधान : श्री राजेश आर्य
मंत्री : श्री अमित कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री शशिकान्त गुप्ता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्यसमाज करोल बाग के तत्त्वावधान में

पं. लेखराम बलिदान दिवस पर व्याख्यानमाला

आर्यसमाज करोल बाग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह एवं पं. लेखराम बलिदान दिवस के अवसर पर सभा के सहयोग से व्याख्यानमाला का आयोजन रविवार 10 मार्च, 2019 को प्रात: 10:30 से 1 बजे तक किया जा रहा है। इस अवसर पर वक्ता के रूप में आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, श्री सुशील पण्डित, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री उपस्थित होंगे। मंच संयोजक आर्यसमाज करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी होंगे। - *विनयव्रत टंडन, मन्त्री*

शहीद सैनिकों श्रद्धांजलि

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के अन्तर्गत बामनिया में संचालित महाशय धर्मपाल, दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा शांति यज्ञ कर पुलवामा, जम्मू कश्मीर में शहीद हमारे सैनिकों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्राचार्य प्रवीण अत्रे ने कहा की यह आतंकवादियों की कायराना हरकत है। इसका भारतीय सेना मुंहतोड़ जवाब देगी। स्टॉफ एवं सभी बच्चों द्वारा वेद मंत्रो का जाप कर शांति मंत्र का पाठ किया गया तथा हवन के बाद 2 मिनट का मौन रखकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई।

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली द्वारा

स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव एवम् बोधोत्सव

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के तत्वाधान में नगर सामुदायिक भवन मोती नगर में दिनांक 3 मार्च रविवार को स्वामी दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव एवम् बोधोत्सव 10 बजे से 2:00 बजे तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ, आचार्य देव जी के भजन एवं डॉ. महेश विद्यालंकार जी के प्रवचन होंगे। मुख्य अतिथि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, विशिष्ट अतिथि के रूप में सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, श्री सतीश चड्डा, श्री विद्यामित्र ठुकराल, महापौर श्री आदेश गुप्ता, निगम पार्षद श्री विपिन मल्होत्रा, महामन्त्री भाजपा श्री राजेश भाटिया एवं भाजपा अध्यक्ष करोल बाग श्री भारत भूषण मदान होंगे।

- वीरेन्द्र सरदाना, महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत एवं आर्यसमाज सोनीपत सै. 14 द्वारा

195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत एवं आर्यसमाज सोनीपत सै. 14 के तत्त्वावधान में 28 फरवरी, 2019 को महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सन्दीप जी होंगे। भजन धर्मरक्षिता शास्त्री के होंगे। - *प्रवीण चावला*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आवश्यकता है

दिल्ली की सब आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्न पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. **सम्पादक :** जो सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश तथा प्रकाशित होने वाले साहित्य के टाइपिंग, प्रूफरीडिंग, सैटिंग का कार्य निपुणता के साथ कर सके।
2. **डी.टी.पी. ऑपरेटर :** जो सभा के मुखपत्र आर्यसन्देश तथा पुस्तक विभाग के प्रकाशन कार्य को निपुणता के साथ कर सके।
3. **सेल्समैन:** जो विभिन्न स्थानों पर जाकर वैदिक साहित्य के आर्डर ला सके/विक्रय कर सके तथा पुस्तक मेलों में भी जाकर साहित्य प्रचार कार्य को सम्पन्न कर सके।
4. **हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक :** जो हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें।
5. **एकाउंटेंट :** जो तथा सहयोगी संस्थाओं में दिल्ली तथा दिल्ली से बाहर भी जाकर/वहीं रहकर कार्य कर सकें।

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि/आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें। **Email:aryasabha@yahoo.com**

- महामन्त्री

विज्ञापन
MUTUAL FUNDS/SIP, INSURANCE, MEDICLAIM,
BONDS, PSM, NPS, F.D., TAX SAVING,
आदि के लिए सम्पर्क करें - *धर्मवीर आर्य, 9810216281*

शोक समाचार

श्री हंसमुख परमार जी को पितृशोक

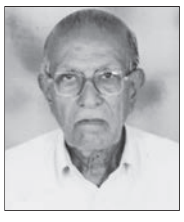

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार जी के पूज्य पिता श्री धर्मशीभाई परमार जी का दिनांक 18 फरवरी, 2019 को 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 फरवरी, 2019 को सायं 3-6 बजे तक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा में आयोजित होगी।

श्री जितेन्द्र भाटिया जी को पितृशोक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष एवं दिल्ली सभा के पूर्व मन्त्री श्री जितेन्द्र भाटिया जी के पूज्य पिता एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान श्री सत्यपाल भाटिया जी का 14 फरवरी, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 फरवरी को आर्य नगर सोसायटी, 91 इन्द्रप्रस्थ विस्तार पटपड़गंज पार्क में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती आर्यसमाजों एवं आर्य वीर दल के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21-22 फरवरी, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 फरवरी, 2019

प्रतिष्ठा में,

एक करोड़ तैंतालिस लाख
से अधिक लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें। यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

‘मोपला’

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की हकीकत जानिये कहानी उन्हीं की जुबानी

इनके जीवन को नई दिशा दिखाने वाले सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक अध्याय आपके जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

“मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।
आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें।
आपके पत्र की प्रतीक्षा में”

MDH असली मसाले सच-सच

महाशय धर्मपाल

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृपया लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह